

[illegible]

नगर। शहरियां रचगई पर्व के जल्दी डांडिया के नाच में नर नारी बंधेयोरों को पानन धन में चरी ओर गलों की भूमि है। भैसे जैसे समन जा राह है कैसे जैसे गलों का रो राह बिंदी परसनां छिगिनीलां पोरसनां में जमन लोह है गलों का र। शाम छहोह हो नगर में बंधे बिखनने लगनी है। ओर हर कोई में मां में गलों में लीन हो लगनी है। नगर से बंधे संध्या में लोहा में बंधेयोरों की नाता के पानन में दर्शन के लिए पढ़ रह है। हर रोमा में बंधेयोरों का अलग अलग भूमि किया जा रह है। यह दर्शन का मिलिसन थकम ६ बजे से रात्रि दस तक चलता है। मां की ओर के पननात प्रसादी का वितरण होता है।